श्री साई सच्चरित्र

(हिन्दी)

(श्री साईबाबा की अद्‌भुत जीवनी तथा उनके अमूल्य उपदेश)

मूल ग्रन्थ (मराठी भाषा) के रचयिता

कै. श्री गोविन्दराव रघुनाथ दाभोलकर (हेमाडपन्त)

हिन्दी अनुवादक

श्री शिवराम ठाकुर

विशेष सहाय्य

प्रो. आद्याप्रसाद त्रिपाठी

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्त व्यवस्था, शिर्डी

सन्‌ २००१

प्रकाशकः
ज.मु. ससाणे
अध्यक्ष,
श्री साईबाबा संस्थान
विश्वस्त व्यवस्था, शिर्डी
ता.राहता, जि.अहमदनगर.

मुंबई कार्यालय :
साईनिकेतन
८०४-बी, डॉ. आंबेडकर रोड,
दादर, मुंबई-४०० ०१४.

सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन

२४ वाँ संस्करणः सन् २०११

प्रतियाँः १,५०,०००

मूल्यः रु. ५० मात्र

मुद्रकः
टॅको व्हिजन्स प्राइवेट लिमिटेड
३८-ए-बी, गव्हर्नमेंट इन्डस्ट्रीयल इस्टेट, चारकोप,
कांदिवली (प.), मुंबई-४०० ०६७.

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्त व्यवस्था, शिर्डी

श्री साई सच्चरित्र - हिंदी अनुवाद – श्री. शिवराम ठाकूर

संस्करण प्रतीयाँ

संस्करण	सन	प्रतीयाँ	संस्करण	सन	प्रतीयाँ
६ वे	सन १९७७	५,०००	७ वे	सन १९८०	५,०००
८ वे	सन १९८३	५,०००	९ वे	सन १९८७	५,०००
१० वे	सन १९८९	१०,०००	११ वे	सन १९९१	२५,०००
१२ वे	सन १९९३	५,०००	१३ वे	सन १९९४	२५,०००
१४ वे	सन १९९४	५०,०००	१५ वे	सन १९९६	२०,०००
१६ वे	सन १९९७	२०,०००	१७ वे	सन १९९९	५०,०००
१८ वे	सन २००१	१०,०००	१९ वे	सन २००१	१,००,०००
२० वे	सन २००२	२,५०,०००	२१ वे	सन २००७	१,१०,०००
२२ वे	सन २००८	२,००,०००	२३ वे	सन २००९	२,००,०००

१६वें संस्करण के प्रति

श्री साई सच्चरित्र (हिन्दी) के १५वें संस्करण की ५०,००० प्रतियाँ दो साल के अन्दर ही समाप्त हो जाने के कारण हिन्दी भाषा-पाठकों को यह धर्मग्रन्थ तुरन्त उपलब्ध कराने की भावना से यह १६वाँ संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। अन्य संस्करणों की भाँति इसको भी साई भक्तों द्वारा उसी तत्परता से अपनाये जाने की आशा है।

द.म. सुकथनकर
अध्यक्ष,
श्री साईबाबा संस्थान, शिरडी

श्री साई सच्चरित्र

विषय सूची

अध्याय	शीर्षक	पृष्ठ
(१)	वंदना, गेहूँ पीसने वाला एक अद्‌भुत सन्त, गेहूँ पीसने की कथा तथा उसका तात्पर्य।	१
(२)	ग्रन्थ लेखन का ध्येय, कार्यारम्भ में असमर्थता और साहस, गरमागरमबहस, अर्थपूर्ण उपाधि 'हेमाडपन्त', गुरु की आवश्यकता।	५
(३)	श्री साईबाबा की स्वीकृति, आज्ञा और प्रतिज्ञा, भक्तों का कार्य-समर्पण, बाबा की लीलायें, ज्योतिस्तम्भ स्वरूप, मातृप्रेम, रोहिला की कथा, उनके मधुर अमृतोपदेश।	१२
(४)	श्री साईबाबा का शिरडी में प्रथम आगमन, संतों का अवतार कार्य, पवित्र तीर्थ शिरडी, श्री साईबाबा का व्यक्तित्व, गौली बुवा का अनुभव, श्री विट्ठल का प्रगट होना, क्षीरसागर की कथा, दासगणु का प्रयाग-स्नान, श्री साईबाबा का शिरडी में प्रथम आगमन, तीन वाड़े।	१७
(५)	चाँद पाटील की बारात के साथ श्री साईबाबा का पुनः आगमन, अभिनन्दन तथा 'श्री साई' शब्द से	२५

संबोधन, अन्य संतों से भेंट, वेशभूषा व नित्य कार्यक्रम, पादुकाओं की कथा, मोहिद्दीन के साथ कुश्ती, मोहिद्दीन का जीवन-परिवर्तन, जल का तेल में रूपान्तर, मिथ्या गुरु जौहरअली।

(६) रामनवमी उत्सव, मस्जिद का जीर्णोद्धार, गुरु के कर-स्पर्श की महिमा, चंदन समारोह, उर्स और रामनवमी का समन्वय, मस्जिद का जीर्णोद्धार। ३३

(७) अद्‌भुत अवतार, श्री साईबाबा की प्रकृति, उनकी यौगिक क्रियाएँ, उनकी सर्वव्यापकता, कुष्ठ रोगी की सेवा, खापर्डे के पुत्र को प्लेग, पंढरपुर गमन, अद्‌भुत अवतार। ४२

(८) मानव-जन्म का महत्त्व, श्री साईबाबा की भिक्षावृत्ति, बायजाबाई की सेवा-शुश्रुषा, श्री साईबाबा का शयन-कक्ष, खुशालचन्द पर प्रेम। ५०

(९) विदा होते समय बाबा की आज्ञा का पालन और अवज्ञा करने के परिणामों के कुछ उदाहरण, भिक्षावृत्ति और उसकी आवश्यकता, भक्तों (तर्खड कुटुम्ब) के अनुभव। ५६

(१०) श्री साईबाबा का रहन-सहन, शयन पटिया, शिरडी में निवास, उनके उपदेश, उनकी विनयशीलता, सुगम पथ। ६३

(११) सगुण ब्रह्म श्री साईबाबा, डाक्टर पंडित द्वारा पूजन, हाजी सिद्दीक फालके, तत्त्वों पर नियन्त्रण। ७०

(१२) काका महाजनी, धुमाल वकील, श्रीमती निमोणकर, नासिक के मुले शास्त्री, एक डाक्टर के द्वारा बाबा की लीलाओं का अनुभव। ७५

(१३) अन्य कई लीलाएँ - रोगनिवारण (१) भीमाजी पाटील, (२) बाला गणपत दर्जी, (३) बापूसाहेब बूटी, (४) आलन्दी स्वामी, (५) काका महाजनी, (६) हरदा के दत्तोपन्त ८०

(१४) नांदेड़ के रतनजी वाडिया, संत मौला साहेब, दक्षिणा मीमांसा गणपतराव बोडस, श्रीमती तर्खड, दक्षिणा का मर्म। ८६

(१५) नारदीय कीर्त्तन पद्धति, श्री चोलकर की शक्कररहित चाय, दो छिपकलियाँ। ९३

(१६-१७) शीघ्र ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति, ब्रह्मज्ञान की योग्यताएँ, बाबा का उपदेश, बाबा का वैशिष्ट्य। ९७

(१८-१९) श्री हेमाडपंत पर बाबा की कृपा कैसे हुई? श्री साठे और श्रीमती देशमुख की कथा, उत्तम विचारों को प्रोत्साहन, उपदेश में नवीनता, निंदा १०४

सम्बंधी उपदेश और परिश्रम के लिये मजदूरी।

(२०) श्री काकासाहेब की नौकरानी द्वारा श्री दासगणु की समस्या का विलक्षण समाधान, अद्वितीय शिक्षा पद्धति, ईशोपनिषद् की शिक्षा। ११७

(२१) (१) श्री व्ही.एच. ठाकुर, (२) श्री अनन्तराव पाटणकर और (३) पंढरपुर के वकील की कथाएँ। १२२

(२२) सर्प-विष से रक्षा : (१) श्री बाला साहेब मिरीकर, (२) श्री बापूसाहेब बूटी, (३) श्री अमीर शक्कर, (४) श्री हेमाडपंत, (५) बाबा के विचार। १२७

(२३) योग और प्याज, शामा की सर्पदंश से मुक्ति, विषूचिका (हैजा) निवारणार्थ नियमों का उल्लंघन, गुरु भक्ति की कठिन परीक्षा। १३३

(२४) श्री बाबा का हास्य विनोद, चने की लीला (हेमाडपन्त), सुदामा की कथा, अण्णा चिंचणीकर और मौसीबाई की कथा, बाबा की भक्त-परायणता। १३९

(२५) (१) दामू अण्णा कासार-अहमदनगर के रुई और अनाज के सौदे, (२) आम्र-लीला, प्रार्थना। १४५

(२६) (१) भक्त पन्त, (२) हरिश्चन्द्र पितले और (३) गोपाल आम्बडेकर की कथाएँ। १५१

(२७) भागवत और विष्णुसहस्रनाम प्रदान कर अनुगृहीत करना, गीता रहस्य, दादासाहेब खापर्डे। १५७

(२८) चिड़ियों का शिरडी को खींचा जाना – (१) लक्ष्मीचंद, (२) बुरहानपुर की महिलाएँ (३) मेघा का निर्वाण। १६४

(२९) (१) मद्रासी भजनी मेला, (२) तेंदुलकर (पिता व पुत्र), (३) डॉ. कैप्टन हाटे और (४) वामन नार्वेकर की कथाएँ। १७२

(३०) शिरडी को खींचे गए भक्त : (१) वणी के काका वैद्य, (२) खुशालचंद, (३) बम्बई के रामलाल पंजाबी। १७९

(३१) मुक्तिदान : (१) संन्यासी विजयानन्द, (२) बालाराम मानकर, (३) नूलकर, (४) मेघा (५) बाघ की मुक्ति। १८४

(३२) गुरु और ईश्वर की खोज : उपवास अमान्य, बाबा के सरकार। १९०

(३३) उदी की महिमा (भाग १) : बिच्छू का डंक, प्लेग की गाँठ, जामनेर का चमत्कार, नारायण राव, बाला बुवा सुतार, अप्पा साहेब कुलकर्णी, हरीभाऊ कर्णिक। १९८

(३४) उदी की महिमा (भाग २) : डॉक्टर का भतीजा, डॉ. पिल्ले, शामा की भयाहू, ईरानी कन्या, हरदा के महानुभाव और बम्बई की महिला की प्रसव पीड़ा। २०६

(३५) काका महाजनी के मित्र और सेठ, निर्बीज मुनक्के, बान्द्रा के एक गृहस्थ की अनिद्रा, बालाजी पाटील नेवासकर, बाबा का सर्प के रूप में प्रगट होना। २१२

(३६) आश्चर्यजनक कथाएँ :(१) गोवा के दो सज्जन, (२) श्रीमती औरंगाबादकर। २१८

(३७) चावड़ी समारोह। २२४

(३८) बाबा की हांडी, नानासाहेब द्वारा देव-मूर्त्ति की उपेक्षा, नैवेद्य वितरण, छाँछ का प्रसाद। २२९

(३९) बाबा का संस्कृत ज्ञान : गीता के एक श्लोक की बाबा द्वारा टीका, समाधि-मन्दिर का निर्माण। २३५

(४०) श्री साईबाबा की कथाएँ : (१) बी.व्ही. देव की माता के उद्यापन समारोह में सम्मिलित होना, और (२) हेमाडपंत के सहभोज में चित्र के रूप में प्रगट होना। २४३

(४१)	चित्र की कथा, चिन्दियों की चोरी और ज्ञानेश्वरी के पठन की कथा।	२४८
(४२)	महासमाधि की ओर (१) भविष्य की आगाही, रामचन्द्र दादा पाटील और तात्या कोते पाटील की मृत्यु टालना, लक्ष्मीबाई शिन्दे को दान, समस्त प्राणियों में बाबा का वास, अंतिम क्षण।	२५३
(४३-४४)	महासमाधि की ओर : (२) पूर्व तैयारी-समाधि मन्दिर, ईंट का खण्डन, ७२ घण्टे की समाधि, बापूसाहेब जोग का संन्यास, बाबा के अमृततुल्य वचन।	२५९
(४५)	सन्देह-निवारण : काकासाहेब दीक्षित का सन्देह और आनन्दराव का स्वप्न, बाबा के शयन के लिये लकड़ी का तख्ता।	२६७
(४६)	बाबा की गया यात्रा, बकरों के पूर्व जन्म की कथा।	२७३
(४७)	पुनर्जन्म : वीरभद्रप्पा और चेनबसाप्पा (सर्प व मेंढक) की वार्ता।	२७८
(४८)	भक्तों के संकट निवारण : सद्‌गुरु के लक्षण, (१) श्री शेवड़े और (२) श्री सपटणेकर तथा श्रीमती सपटणेकर (३) संतति-दान।	२८४

(४९) परीक्षा : (१) हरि कानोबा, (२) सोमदेव स्वामी, (३) नानासाहेब चाँदोरकर की कथाएँ। २९०

(५०) (१) काकासाहेब दीक्षित, (२) श्री टेंबे स्वामी, (३) बालाराम धुरन्धर की कथाएँ। २९५

(५१) उपसंहार : सद्‌गुरु श्री साई की महानता, प्रार्थना, फलश्रुति और प्रसाद-याचना। ३०१

॥ॐ श्री साई यशःकाय शिरडीवासिने नमः॥